प्रेमचंद साहित्य संस्थान गोरखपुर एवं राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय ई-कार्यशाला (15 जुलाई से 30 जुलाई 2020)

प्रेमचंद को कैसे पढ़ें?

■ प्रस्तुति : प्रिया

Govt. Girls P G College GHAZIPUR (U.P.)

समय के साथ-साथ लेखक को पढ़ने-पढ़ाने का नजरिया भी बदलता रहता है। ज्यों-ज्यों समय कठिन होता है, त्यों-त्यों लेखक की प्रासंगिकता बढ़ती जाती है। प्रेमचंद हिंदी कथा साहित्य के एक ऐसे महत्वपूर्ण लेखक हैं, जिनको पढ़े बिना हिंदी कथा साहित्य का ज्ञान अधूरा है। प्रेमचंद और उनका साहित्य भारत के लगभग सभी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य हिस्सा है। प्रेमचंद के समय से लेकर अब तक बहुत से शोध कार्य संपन्न हो चुके हैं और अभी भी यह कार्य निरंतर जारी है। प्रेमचंद पर हुए शोध से इन्हें जानने-समझने के कई औजार विकसित हुए हैं। इस क्रम में उनकी बहुत सी अप्रकाशित कृतियाँ प्रकाश में आ चुकी हैं और बहुत सी अभी आनी बाकी हैं, हिंदी के पाठकों को आज इसे जानने और समझने की जरुरत है। इसके साथ ही जब साहित्य और समाज में नये सन्दर्भ और विमर्श जुड़ जाते हैं तो इन संदर्भों के आलोक में भी रचनाओं का पुनःपाठ और उसके सन्दर्भों पर नवीन दृष्टिकोण से चिंतन करना आवश्यक होता है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए डॉ निरंजन कुमार यादव (राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर) ने 'प्रेमचंद को कैसे पढ़ें?' राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया, साथ ही इसमें मैंने भी प्रतिभाग किया। यह कार्यशाला विभिन्न दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण थी। पहला यह कि जब आनलाइन कार्यक्रमों की धूम मची हुई हो तो ऐसे में गुणवत्तापूर्ण पूरी ईमानदारी और लगन के साथ इस कार्यशाला का आयोजन किया जाना, एक बड़ी उपलब्धि थी। जिसमें देश के लगभग 17 राज्यों से शोधार्थी, प्राध्यापक एवं आचार्यों ने प्रतिभाग किया। दूसरा, हिंदी भाषी राज्य के साथ गैर हिंदी भाषी राज्य के विद्वान और प्रतिभागियों ने प्रेमचंद को पढ़ने और पढ़ाने का अनुभव साझा किया। तीसरा, इस पूरे कार्यशाला में प्रत्येक दिन 1 घंटा प्रतिभागी सत्र का आयोजन होता था, जिसमें प्रेमचंद सम्बन्धी प्रश्नों और जिज्ञासाओं पर बात-चीत होती थी। यह सुखद रहा कि यह कार्यशाला एक तरफा न होकर, यह व्याख्यान के साथ-साथ पाठ और संवाद का भी कार्यक्रम बना रहा। इस कार्यशाला के सम्बन्ध में वीरेन्द्र यादव, ए अरविंदाक्षन, सदानन्द शाही, चितरंजन मिश्र, रोहिणी अग्रवाल, दिनेश कुशवाह, दिनेश कर्नाटक एवं गजेन्द्र पाठक जैसे कई मूर्धन्य विद्वान, कवि, आलोचक एवं साहित्यकारों की यह टिप्पणी कि—'अब ऐसे कार्यक्रम बहुत कम होते हैं। जहाँ शोध से सामने आए नवीन तथ्यों के साथ विषयों की विविधता पर बात की जा रही हो।' यह उक्ति हमारे लिए उत्प्रेरक का काम करती है।

यह मेरे और मेरे जैसे अनेक लोगों के लिए पहला अवसर था जहाँ एक ही मंच पर भारत के अनेक

ग्राम-मठिया धीर, पोस्ट रामकोला, कुशीनगर

प्राचार्य
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर-233001

विश्वविद्यालयों और संस्थाओं से जुड़े उच्च कोटि के वक्ताओं को सुना गया और उनसे संवाद किया गया। जुड़ने से पहले मेरे मन में भी यही था कि प्रेमचंद पर क्या सुनना! सब वही ढाक के तीन पात लोग बताएँगे, लेकिन कार्यक्रम से जुड़ने के बाद मेरी पूरी अवधारणा ही बदल गयी। एक साथ किसी लेखक को मुक्कमल रूप से पढ़ने और समझने का यह मेरा पहला अनुभव था। इस ज्ञानवर्धक कार्यक्रम के आयोजन के लिए निरंजन कुमार और उनकी टीम को शुभकामनाएँ एवं धन्यवाद। कोरोना काल जैसी विपरीत परिस्थितियों में इतनी लंबी कार्यशाला आयोजित करने के लिए वास्तव में बहुत साहस और धैर्य की आवश्यकता थी, जिसे उन्होंने कर दिखाया। पूरे कार्यक्रम का संयोजन बेहतरीन तरीके से किया गया, कहीं भी कोई दुहराव देखने को नहीं मिला। यह कार्यशाला मुख्यतः साहित्य प्रेमियों, शोधार्थियों तथा सुधी पाठकों के वैचारिक विमर्श हेतु आयोजित की गयी थी। जिसमें प्रेमचंद के उपन्यास, कहानियाँ, कथेतर गद्य, पत्रकारिता, स्त्री जीवन, दलित सन्दर्भ आदि विषयों पर हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वानों ने अपने व्याख्यान दिए। जिसका संक्षिप्त एवं क्रमबद्ध विवरण निम्नवत है–

1. 15 जुलाई 2020–कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र (मुख्य अतिथि–प्रो. सदानंद शाही, अध्यक्ष–प्रो. चित्तरंजन मिश्र)

15 जुलाई से 30 जुलाई के मध्य 'राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय' गाजीपुर एवं 'प्रेमचंद साहित्य संस्थान' गोरखपुर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'प्रेमचंद को कैसे पढ़ें?' विषय पर 16 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आज उद्घाटन हुआ। जिसके मुख्य अतिथि प्रेमचंद साहित्य संस्थान के निदेशक एवं हिंदी विभाग काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सदानंद शाही थे। उन्होंने 'प्रेमचंद को कैसे पढ़ें?' से पूर्व यह बताया कि 'प्रेमचंद को क्यों पढ़ें?' प्रोफेसर शाही ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रेमचंद आत्मकेंद्रीयता को तोड़कर हमारे मन को उदात्त बनाने वाले लेखक हैं। वह पाखंड विरोधी हैं। वह जाति, जन्म एवं जेंडर के स्वरुप में हमारे जीवन एवं समाज में आए विडंबना को चिन्हित कर उस पर सवाल उठाने वाले लेखक हैं। उनकी कहानियों एवं उपन्यासों से गुजरते हुए हम बखूबी अपने देश समाज एवं जीवन के स्पंदन को महसूस कर सकते हैं। वह अपने कथानायकों एवं चरित्रों के माध्यम से हमारी आत्मा पर जमी हुई मैल को हटाने का काम करते हैं। मुक्तिबोध ने उनके बारे में ठीक ही कहा था कि 'प्रेमचंद आत्मा के शिल्पी' हैं। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि जो भी प्रतिभागी इस कार्यशाला में आज सम्मिलित हो रहे हैं वह इस कार्यशाला के समाप्त होने तक वही नहीं रह जाएंगे। उनके विचार में एक अद्भुत परिवर्तन आ चुका

प्राचार्य
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर-233001

होगा। साहित्य और समाज को देखने की एक नई दृष्टि विकसित हो चुकी होगी। वह जिस समाज एवं जीवन की परिकल्पना कर रहे हैं इस कार्यशाला के बाद उससे और बेहतर परिकल्पना बन जाएगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सेवानिवृत्त आचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर चितरंजन मिश्र ने कहा कि समय ज्यों-ज्यों गाढ़ा एवं कठिन होता जायेगा त्यों-त्यों प्रेमचंद का साहित्य प्रासंगिक होता जाएगा। प्रेमचंद हिंदी साहित्य में तुलसी और कबीर के बाद सबसे अधिक पढ़े जाने वाले एवं लोकप्रिय लेखक हैं। तुलसी और कबीर के पास जनता तक पहुँचने का साधन भक्ति एवं अध्यात्म का है जबकि प्रेमचंद जनता तक इन दोनों चीजों को नकार कर पहुँचते हैं। प्रेमचंद लोक चेतना के लेखक हैं।

इसी क्रम में 16 जुलाई 2020 को 'गोदान' विषय पर डॉ. विशाल विक्रम सिंह राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, 17 जुलाई 2020 को 'गबन' विषय पर प्रो श्रद्धा सिंह काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी, 18 जुलाई 2020 को 'कर्मभूमि' विषय पर डॉ. प्रवीण यादव, 19 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद की विरासत' विषय पर डॉ. कमलेश वर्मा, 20 जुलाई 2020 को 'प्रेमाश्रम' विषय पर डॉ. अनिल अविश्रांत, 21 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद की कहानियाँ' विषय पर दिनेश कर्नाटक, 22 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद का कथेतर गद्य' विषय पर लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता, 23 जुलाई 2020 को 'सेवासदन' विषय पर डॉ. जनार्दन ,24 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद और किसान जीवन' विषय पर प्रो. राजेश मल्ल, 25 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद और पारिस्थितिकी' विषय पर प्रो. के वनजा एवं 'प्रेमचंद और हिंदी पत्रकारिता' विषय पर डॉ. राजीव रंजन, 26 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद की कहानियाँ-2' विषय पर प्रो. ए अरविंदाक्षन एवं 'निर्मला' उपन्यास पर प्रो. नामदेव गौड़ा, 27 जुलाई 2020 को 'रंगभूमि' विषय पर प्रो. दिनेश कुशवाह, 28 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद : विविध संदर्भ' विषय पर वीरेन्द्र यादव और 29 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद के कथा साहित्य में स्त्री जीवन' विषय पर डॉ. प्रीति चौधरी एवं राष्ट्रवाद और प्रेमचंद विषय पर प्रो. राजकुमार का महत्वपूर्ण व्याख्यान एवं संवाद आयोजित हुआ।

30 जुलाई 2020 को कार्यशाला के समापन सत्र में मुख्य वक्ता प्रसिद्ध आलोचक एवं लेखिका प्रोफेसर रोहिणी अग्रवाल थीं। उन्होंने अपनी बात रखते हुए कहा कि—प्रेमचंद आज भी इतने लोकप्रिय क्यों हैं? अगर इस बात पर मैं विश्लेषण करती हूँ तो यह पाती हूँ कि उनके पात्र जनमानस को अपनी ओर खींचते हैं। उनके पात्रों की विशेषता उनकी सरलता और उनकी पारदर्शिता है। लेकिन एक मुक्त पाठक की तरह ही नहीं एक कड़क आलोचक की तरह मैं उनके चरित्र चित्रण के इन दो विशेषताओं को देखूँ तो मैं कहूँगी कि उनके चरित्र पारदर्शी, सरल एवं सादगी पूर्ण चरित्र वाले हैं जो हमें छू रहे हैं।

कार्यक्रम के दूसरे विशिष्ट वक्ता प्रोफेसर गजेंद्र पाठक (हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद) थे। इन्होंने 'प्रेमचंद की इतिहास दृष्टि' पर अपनी बात रखते हुए कहा कि आप कल्पना करें कि शुक्ल जी के इतिहास में एक नहीं... दो त्रिवेणी है। एक त्रिवेणी है भक्ति आंदोलन की है और दूसरी है लोक जागरण की। रामविलास जी के शब्दों में कहे तो एक दूसरी त्रिवेणी है नवजागरण की। जिसमें तीन लोग हैं। एक भारतेंदु, दूसरे महावीर प्रसाद द्विवेदी और तीसरे प्रेमचंद। इस कार्यक्रम में अध्यक्षीय व्याख्यान प्रोफेसर सदानंद शाही (निदेशक, प्रेमचंद साहित्य संस्थान गोरखपुर) जी ने दिया। उन्होंने 'प्रेमचंद को कैसे पढ़ें' पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रेमचंद ने जिन समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई है, वह समस्याएँ आज भी हमारे सामने मौजूद है। वह क्यों मौजूद हैं और उनका मौजूद होना प्रसन्नता की बात नहीं है बल्कि नए सिरे से सोचने और विचारने का विषय है। मैं धन्यवाद देता हूँ डॉक्टर निरंजन यादव को और उनके सभी साथियों विशेष रूप से संतन कुमार राम, शशिकला जायसवाल और राघवेन्द्र को कि उन्होंने 'प्रेमचंद को कैसे पढ़ें?' विषय पर इस कार्यशाला का आयोजन किया।

राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय गाजीपुर की प्राचार्य डॉ. सविता भारद्वाज ने सभी अतिथियों को आभार व्यक्त किया और कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए कार्यशाला के आयोजकों की सराहना की। विभागाध्यक्ष एवं आयोजन सचिव डॉ. संगीता मौर्य ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

यह कार्यशाला प्रशिक्षुओं के ज्ञानवर्धन में बड़ी सहायक और प्रेमचंद के सर्वांग लेखन से अवगत कराने में सफल रही है। 16 दिन में हम सब प्रेमचंदमय हो गए थे। उनका परिवेश, उनके पात्र जीवंत हो उठे थे। एक साथ हम लोगों ने प्रेमचंद को समग्रता में पहली बार पढ़ा। गाजीपुर जैसे छोटे शहर में इतना महत्वपूर्ण एवं व्यवस्थित आयोजन होना हम जैसे हिंदी के पाठकों को यह आश्वस्ति प्रदान करता है कि हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। छोटे-छोटे जगहों पर भी महत्वपूर्ण आयोजन हो रहे हैं लेकिन बड़े नामों के शोर में उनकी अनुगूँज दब जाती है।

●

प्राचार्य
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर-233001

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, उ.प्र.-233001

(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद, बेंगलुरू द्वारा B++ ग्रेड से प्रत्यायित)

कार्यालय : 0548-2220363 आवास : 0548-2220839
मोबाइल : .....

Website : www.gwpgc.ac.in
E-mail : ggpgc09@gmail.com, FAX : 0548-2220363

Online Seminar on N-List and open academic Resource

आज दिनांक 28: 02: 2021 को प्राणी विज्ञान विभाग की ओर से 'N-List and open academic Resource' विषय पर एक दिवसीय ऑनलाइन मोड पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। आज कोविड-19 वैश्विक महामारी के कारण दुनिया थम सी गई है। कोविड-19 नामक इस महामारी के भयंकर प्रकोप के कारण शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा बाधित हो गयी है। ऐसे समय में डिजिटल माध्यम से शिक्षा विद्यार्थियों के लिए ज्ञान के द्वार खोल रही है।

इस ऑनलाइन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर सविता भारद्वाज ने N-List के महत्व व उपयोगिता के विषय में चर्चा की। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रोफेसर अजय कुमार श्रीवास्तव, गोरखपुर विश्वविद्यालय ने N-List और एकेडमिक रिसर्च के प्रयोग करने एवं प्रगति की असीम संभावनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि जब लाक-डाउन के दौरान विद्यार्थी अपने संस्थानों में जाकर अध्ययन नहीं कर पा रहे हैं तब ऐसे समय में विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने ईपीजी पाठशाला को डेवलप किया है। जिसमें लगभग 22 हजार से ज्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। साथ ही NPTEL की चर्चा करते हुए कहा बताया कि यह विद्यार्थियों के साथ कामकाजी लोगों के लिए भी वरदान साबित हो रहा है। इसका पूरा पाठ्यक्रम उच्चगुणवत्ता वाले हैं। VIDYA MITRA ऑनलाइन लर्निंग पोर्टल का जिक्र करते हुए ई-कन्टेंट की जानकारी दी। इसी तरह OER की सुविधा का जिक्र करते हुए कहा कि यह स्वतंत्र रूप से सुलभ ऑनलाइन पुस्तकालय है ,जहाँ सबके लिए सामग्री सुलभ है। अब FDP और orientation की सुविधा भी ऑनलाइन के माध्यम से उपलब्ध है। आज छात्र डिजिटल माध्यम से शिक्षा एवं विभिन्न प्रशिक्षण के साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर अपने व्यक्तित्व का विकास कर रहे हैं। यह दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले कामकाजी व निर्धन छात्रों के लिए भी बहुत उपयोगी है। इस कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर संतन कुमार राम, विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग द्वारा किया गया। जन्तु विज्ञान के प्रभारी डॉ दिवाकर मिश्र ने सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापन किया । इस संगोष्ठी में महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक एवं छात्राएं ऑनलाइन माध्यम से जुड़ी रहीं।

प्राचार्य
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, उ.प्र.-233001

(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद, बेंगलुरू द्वारा B++ ग्रेड से प्रत्यायित)

कार्यालय : 0548-2220363 आवास : 0548-2220839
मोबाइल : .....

Website : www.gwpgc.ac.in
E-mail : ggpgc09@gmail.com, FAX : 0548-2220363

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में बौद्धिक सम्पदा अधिकार की महत्ता

आज दिनांक 12 नवम्बर 2020 को राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर के अर्थशास्त्र विभाग की ओर से "वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में बौद्धिक सम्पदा अधिकार की महत्ता " विषय पर एक ऑनलाइन एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर सविता भारद्वाज ने कहाँ कि हमारी सभ्यता अत्यंत प्राचीन है। हमारे ऋषियों -मुनिओं ने वेद -पुराण सहित अनेक रचनाओं में अपने नामों का उल्लेख करना उचित नहीं समझा किन्तु वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था में ऐसा नहीं है।

आज खोजो, अविष्कारों और ज्ञान के स्रोतों पर कब्जा जमाने की होड़ लगी है। उन्होंने कहा कि बौद्धिक संपदा अधिकार को निजी विशेषाधिकार मानने की बजाय इसका इस्तेमाल विस्तृत रूप से सामाजिक आर्थिक विकास में होना चाहिए। सृजनात्मक संसाधनों पर बाजार का कब्ज़ा न हो बल्कि उन तक जरूरतमंद लोगों की पहुंच सुनिश्चित हो। ऑनलाइन संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. बाला मुरगन, असिस्टेंट प्रोफेसर, पेरियार विश्वविद्यालय कोयंबटूर ने कहाँ कि जब पूरी दुनिया में इस बात पर बहुत तेज हुई है कि कैसे बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा किया जाए तब संयुक्त राष्ट्र संघ के अभिकरण के रूप में वैश्विक बौद्धिक संपदा संगठन की स्थापना हुई। बौद्धिक संपदा अधिकार प्रदान करने का मूल उद्देश्य अविष्कारों और सृजनशीलता को बढ़ावा देना है। आज पूरे विश्व में बौद्धिक संपदा अधिकारों का महत्व बढ़ गया है। कॉपीराइट, पेटेंट, ट्रेडमार्क, भोगौलिक पहचान पर हो रही बसें इसके प्रमाण है। भारत सरकार ने बौद्धिक संपदा के संरक्षण हेतु पेटेंट अधिनियम 1970 पेटेंट (संशोधन)अधिनियम 2005, ट्रेडमार्क अधिनियम1999, राष्ट्रीय बौद्धिक सम्पदा अधिकार नीति 2016 सहित अनेक कानून बनाये हैं। उन्होंने बताया कि हमारे यहाँ ज्ञान का भंडार हैं किन्तु आमजन को पेटेंट सम्बंधित कानूनों की जानकारी नहीं है। इसलिए सरकार को बौद्धिक सम्पदा अधिकार सम्बन्धी जानकारी को जन -जन तक पहुंचना होगा तथा पेटेंट प्रक्रिया को सरल बनाना होगा ताकि नवाचार तथा रचनात्मकता को बढ़ावा मिल सके। इस कार्यक्रम का संचालन अर्थशास्त्र विभाग प्रभारी डॉ हरेन्द्र यादव द्वारा किया गया तथा धन्यबाद ज्ञापन डॉ. पियूष सिंह ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक तथा बड़ी संख्या में छात्राएं ऑनलाइन माध्यम से जुडी रहीं।

प्राचार्य
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, उ.प्र.-233001

(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद, बेंगलुरू द्वारा B++ ग्रेड से प्रत्यायित)

कार्यालय : 0548-2220363 आवास : 0548-2220839
मोबाइल : .....

Website : www.gwpgc.ac.in
E-mail : ggpgc09@gmail.com, FAX : 0548-2220363

Online Workshop on Basic Research Methodology

Report on Online Basic Research Methodology for Research scholars and Post Graduate students of home Science, Education, Economics and others during 09-14 September 2020. The workshop was planned to disseminate knowledge relating to the fundamental methods and methodology in Social Sciences research for Research Scholars and emerging social scientist of the college. The participants included 18 Research Scholars and 40 Post Graduate students. Altogether, there were 10 technical sessions which dealt with different aspects of research methodology. This workshop starting from 4.0 - 7.0 Pm was divided in two sessions each day of 90 minutes duration.

The inaugural function was held on the Evenining of 09 September 2020. Principal Government Girls PG College, Sewapuri Varansi, Prof. Sudha Panday inaugurated the function online. Prof. Savita Bhardwaj Principal of this college presided over the function. The IQAC Head Dr Santan Kumar Ram, Dr Sambhu Sharan Prasad In-charge Department of Home Science offered felicitations for the programme. Course coordinator Dr. Shiv Kumar, Assistant Professor Psychology, welcomed the participants and gave an introductory speech. He also presented the outline and requirement of workshop. Mrs. Vandana Yadav Research scholar, proposed the vote of thanks. All the speakers were focusing on the needs for conducting research methodology courses and expressed their concern over the quality degradation in research happening across India. Such workshops, according to them will provide orientation to the students to proceed with their research in a scientific and systematic way.

The first technical session was conducted by Dr. Tushar Singh, Asst. Prof Psychology BHU, Varanasi. He provided an overall idea about **Research Problem Selection and research process** starting from selecting the research question, to research design, to data analysis and report writing. He stresses that research starts with a question or problem, accepts certain basic assumptions, expects critical interpretations, requires unbiased data collection analysis, performs validation, needs articulated documentation and leads to further research.

It was followed by the 2nd technical session conducted by the Shambhu Saran Prasad, Assistant Professor of Physical Education. The title of the session was **framing the research problem and formulation of research hypothesis**. He was able to provide a systematic methodology by which

प्राचार्य
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर

the researchers can develop their research problem and focus on it. He provided adequate help to the participants by mentioning suitable examples of how one can you design a research problem and how research hypothesis can be formulated.

The 3rd technical session was handled by Dr. Vandana Kumari, Associate Professor of Home Science, Agriculture University of Banda , UP. Dr. Vandna spoke on the topic **Methodological issues in social science research**. She was speaking on the quantitative type of methodological issues and the qualitative type of methodological issues and the advantages and disadvantages of these two methods and also on the current trend of using a hybrid methodology or mixed methods whereby you combine these two methods.

There was also a Technical session, (4th) on **sampling methods** handled by Dr. Shiv Kumar, Assistant Professor Psychology of the college. He was focusing on the different types of sampling techniques that the researchers can adapt from random sampling to non-random sampling methods. He was able to convey the participants on the methods by which adequate number of sample can be identified for a particular type of research.

The technical session (5th) on **data collection instruments**, particularly on questionnaire and interview schedule was handled by Dr. Santan Kumar Ram, Assistant Professor of Geography of the college. He was focusing on the do's and don'ts while preparing a questionnaire with a suitable example. Qualitative methods in social science research was also given due importance in the workshop.

The technical 6th session on **qualitative methods** was handled by Dr. Mukta Singh, Associate Professor Home Science, GDC Aurai Bhadhoi. She focused on Interview, narrative analysis, case study and its possibilities in research. Madam started her session with the meaning of research which means to describe, explore and explain. She also discussed the difference between quantitative and qualitative.

The 7th technical sessions was handled by **quantitative research method** taken by Dr. Meeta Saral, Associate Professor of Home science SGGDC, Gohna Mau. Madam initiated her session which the meaning of quantitative research. She also described the strengths of quantitative research which are enables testing and validating/ modifying existing theories about how and why phenomena occur and develop new theories by collecting data and testing hypothesis. She also pointed out few weaknesses of quantitative research.

The 8th technical session on **Data Analysis and Interpretation** was taken by Dr. Harendra Yadav. He started with the meaning of research and different steps of research. He talked about the characteristics of quantitative data – expressed by number, thorough measurement and always numeric data. He also discussed various scales of measurement – ratio scale, internal scale, ordinal scale and nominal scale. He explained the stages of data analysis process – editing, data cleaning, data coding to raw data, data presentation, data interpretation and discussion. Furthermore, he also

प्राचार्य
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

explained the descriptive data analysis – univariate, bivariate, multivariate and visual aids such as histogram, bar charts, pie charts & line graphs.

The 9th technical session was handled by Dr Amit Yadav Assistant Professor of Philosphy on **Ethics in research**. The facilitator began by posing question what do you think about ethics in research? He deliberates the unethical practices ongoing in research scenario. He also facilitate the ways how research can be to harmful by providing situation and live example. This session provides learners about psychological, economic, physical harm and ethical issues, three ethical principles, Safety, Privacy and confidentiality of participant's information how to protect themselves, their research work by adopting ethical code and procedures followed while conducting research.

The 10th session on **report writing in research** which was taken by Dr. Neha Acharya, Assistant Professor of Psychology Gulab Devi Mahila Degree College Ballia. Madam started her session with the meaning of research report which means a condensed form or a brief description of the research work done by the researcher. She said that research report should be concise, clear, honest, complete and accurate. She also discussed the structure of research report and the format of a research report. She also explained the chapter wise writing of research thesis and the various elements of each chapter. She also pointed out the rules of typing, difficulties in writing a report and features of a good report.

The last **Valedictory Session** was handled by Dr. Shiv Kumar, the Convener of the workshop and Assistant Professor at Department of Psychology. The rules and ways by which academic writing has to be undertaken were specifically mentioned during the session. Finally, the last session was devoted for the participants to share their experience. The course convener gave enough time for scholars to share their experience and also to point out the drawbacks of the workshop. Most of the participants had an opinion that this was the most valuable and memorable workshop that they have attended because most of the topic of doing social science research was covered by the workshop right from identifying a research problem, to formulating a research problem, developing a research design, developing a research hypothesis, preparing questionnaire and interview schedule, collecting data, doing qualitative research and finally report writing. Also the students gave a suggestion that it would be better if adequate time is given for them to discuss their own research topic with resource persons. To conclude the research methodology workshop for research scholars and future researcher- PG students in social sciences turned out to be a rich experience for the participants, raising their confidence to proceed with scientific research and produce quality output.

प्राचार्य
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर

Seminar on 'N-List and open academic Resource

आज दिनांक 28-02-2021 को प्राणी विज्ञान विभाग की ओर से 'N-List and open academic Resource' विषय पर एक दिवसीय ऑनलाइन मोड पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। आज कोविड-19 वैश्विक महामारी के कारण दुनिया थम सी गई है। कोविड-19 महामारी के भयंकर प्रकोप के कारण शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा बाधित हो गयी है। ऐसे समय में डिजिटल माध्यम से शिक्षा विद्यार्थियों के लिए ज्ञान के द्वार खोल रही है।

इस Cisco-Webex ऑनलाइन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर सविता भारद्वाज ने N-List के महत्व व उपयोगिता के विषय में चर्चा की। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रोफेसर अजय कुमार श्रीवास्तव, गोरखपुर विश्वविद्यालय ने N-List और एकेडमिक रिसर्च के प्रयोग करने एवं प्रगति की असीम संभावनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि जब लाक-डाउन के दौरान विद्यार्थी अपने संस्थानों में जाकर अध्ययन नहीं कर पा रहे हैं तब ऐसे समय में विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने ईपीजी पाठशाला को डेवलप किया है। जिसमें लगभग 22 हजार से ज्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। साथ ही NPTEL की चर्चा करते हुए कहा बताया कि यह विद्यार्थियों के साथ कामकाजी लोगों के लिए भी वरदान साबित हो रहा है। इसका पूरा पाठ्यक्रम उच्चगुणवत्ता वाले हैं। VIDYA MITRA ऑनलाइन लर्निंग पोर्टल का जिक्र करते हुए ई-कन्टेंट की जानकारी दी। इसी तरह OER की सुविधा का जिक्र करते हुए कहा कि यह स्वतंत्र रूप से सुलभ ऑनलाइन पुस्तकालय है ,जहाँ सबके लिए सामग्री सुलभ है। अब FDP और orientation की सुविधा भी ऑनलाइन के माध्यम से उपलब्ध है। आज छात्र डिजिटल माध्यम से शिक्षा एवं विभिन्न प्रशिक्षण के साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर अपने व्यक्तित्व का विकास कर रहे हैं। यह दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले कामकाजी व निर्धन छात्रों के लिए भी बहुत उपयोगी है। इस कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर संतन कुमार राम, विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग द्वारा किया गया। जन्तु विज्ञान के प्रभारी डॉ दिवाकर मिश्र ने सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस संगोष्ठी में महाविद्यालय के सभी 21 प्राध्यापक एवं 375 छात्राएं प्रतिभागी रहीं।

(DIWAKAR MISHRA)

प्राचार्या
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर-233001